Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4 November- December 2025 / VOL-02 ISSUE-III

25

आम आदमी की स्थिति के प्रति सजग ग़ज़लकार : ज्ञानप्रकाश विवेक

वैशाली दत्तात्रय शिंदे
हिंदी विभाग
सहकार महर्षी भाऊसाहेब संतुजी थोरात कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, संगमनेर, जि. अहमदनगर

सारांश :हिंदी ग़ज़ल को दुष्यंतकुमार से आगे ले जाने में ज्ञानप्रकाश विवेक सफल हुए हैं। उन्होंने हिंदी ग़ज़ल के कथ्य में व्यापक परिवर्तन किया है। आधुनिक चिंतन उनकी ग़ज़लों में सर्वत्र परिलक्षित होता है। नव-नवीन विषयों को उन्होंने अपनी गजलों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। महानगरीय जीवन की वास्तविकता का सूक्ष्म चित्रण आपकी ग़ज़लों की महत्त्वपूर्ण विशेषता है। पर्यावरण बोध, नारी-विमर्श, जीवन-दर्शन जैसे विषयों को आधार बनाकर कहे गये आपके शेर पाठक के मन-मस्तिष्क को प्रभावित करते हैं। बदलते समय का प्रभाव आपकी ग़ज़लों में स्पष्ट से दृष्टिगोचर होता है। आशय एवं अभिव्यक्ति का सुंदर समन्वय ज्ञानप्रकाश की ग़ज़लों में दिखाई देता है। अतः हम कह सकते है कि हिंदी ग़ज़ल-साहित्य को संपन्न बनाने में ज्ञानप्रकाश विवेक की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है।

बीज शब्द : गरीब आम आदमी, आकांक्षाएँ, भयानक पीड़ा, सामाजिक व्यवस्था, सामाजिक विषमता, सर्वहारा वर्ग, झुग्गी-झोपड़ियाँ, जनसामान्य व्यक्ति, अभावों से ग्रस्त, पूंजीपति वर्ग।

प्रस्तावना:

ग़ज़ल एक संश्लिष्ट विधा है। जटिल है उतनी ही विचित्र विधा भी हम कह सकते है। विचित्रता यह कि इस विधा का शिल्प, कथ्य को ठोस और लोच-दोनों रूप प्रदान करता है। यह विरोधाभास ही, ग़ज़ल की शक्ति है। हिंदी ग़ज़ल का जन्म उर्दू ग़ज़ल से हुआ हो, लेकिन अब यह विधा हिंदी काव्य में अपनी विशिष्ट पहचान बना चुकी है। हिंदी ग़ज़लकारों ने शऊर के साथ ग़ज़ल विधा का विकास किया है। हिंदी ग़ज़लकारों में अमीर खुसरो को पहला ग़ज़लकार माना जाता है तबसे लेकर आधुनिक काल में दुष्यंतकुमार द्वारा ग़ज़ल विधा का विकास हुआ है। दुष्यंतकुमार के उपरान्त मानो ग़ज़ल की एक परम्परा चलती रही है जिसमें चन्द्रसेन विराट, ज़हीर कुरेशी, हरेराम समीप, ज्ञानप्रकाश विवेक आदि नाम उल्लेखनीय है। इनमें ज्ञानप्रकाश विवेक का नाम विशेष रूप से लिया जा सकता है। इनकी ग़ज़लों में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, मानवीय मूल्य, आम आदमी की स्थिति, गरीबी, नारी की स्थिति इन विषयों को उजागर किया गया है।

वस्तुतः भारत आम आदमियों का देश है। जिन्हें जीवन के सुख उपलब्ध नहीं है और जिंदा रहने के लिए जिन्हें संघर्ष करना पड़ता है। जो संपन्न वर्ग के द्वारा शोषित है। दुःख-दर्द भरा जीवन जीने के लिए विवश है उन्हें आम आदमी के नाम से संबोधित किया जाता है। ग़ज़लकार भावुक एवं संवेदनशील होता है अतः समाज के उपेक्षित, शोषित वर्ग के प्रति उसकी प्रतिबध्दता है। वह आम आदमी की त्रासदी को इसलिए व्यक्त करता है कि उसकी स्थिति में सुधार हो। समाज और शासन उसे भी 'आदमी' के रूप में देखें।

डॉ. मधु खराटे आम आदमी के बारे में अपने ग्रंथ 'दुष्यंतोत्तर हिंदी ग़ज़ल' में अपना मंतव्य स्पष्ट करते है - "आम आदमी की जिन्दगी से सम्बध्द अनेक सामाजिक बिंब-प्रतिबिंब हिंदी ग़ज़लों में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होते हैं। वर्तमान युग में आम आदमी अनेकानेक यातनाओं एवं मुसीबतों से गुजर रहा है। उसकी तकलीफों एवं पीड़ाओं को हिंदी ग़ज़लकारों ने अपनी ग़ज़लों के माध्यम से मार्मिक अभिव्यक्ति प्रदान की है।"[1] आम आदमी के हालात को देखकर आश्चर्य होता है कि इतना नारकीय जीवन गुजारते हुए भी वह जिंदा कैसे है? उसका मौत से साक्षात्कार क्यों नहीं हो पाया है। आम आदमी झोपडी में रहकर अपनी उघडी हुई जिन्दगी को टाँकने और सीने का प्रयास करता रहता है। उसकी स्थिति पर भाष्य करते हुए ग़ज़लकार लिखते हैं -

शोध करने लग गये यमदूत अब इस बात पर
मौत के जंगल में कैसे आदमी जीता रहा
झोंपड़ी में बैठकर कलुआ चिलम पीता रहा
अपनी उघड़ी जिन्दगी को टाँकता-सीता रहा [2]

आम आदमी की जिजीविषा उसे जिंदा रखे हुए है। कई बार विपरित परिस्थितियों के वात्याचक्र ने उसे हैरान-परेशान किया परंतु वह दीये के समान प्रज्ज्वलित होता रहा। यह उसकी सहन करने की विवशता और शक्ति भी है -

मैं आरती का हूँ दीया बुझा नहीं अब तक
हजारों बार हवाओं ने धमकियाँ दी हैं [3]

ज्ञानप्रकाश विवेक जी मानते है कि 'जिसका कोई रकीब और न कोई हबीब होता है / वह आदमी जहान में गरीब होता है।' यही गरीब आम आदमी है। झोपड़ियों में रहनेवाला यह आम आदमी दर्दभरी जिन्दगी जी रहा है -

झाँक तो ले उस सिसकती झोंपड़ी में तू ए दोस्त!

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4 November- December 2025 / VOL-02 ISSUE-III

दर्द के तेजाब से चेहरे को धोता है कोई [4]

वह झोपड़ी में रहकर भी स्थितियों से समझौता कर लेता है। अन्न, वस्त्र जैसे आवश्यकताओं के लिए संघर्ष करते हुए भी वह फकिराना जिन्दगी जी रहा है। ग़ज़लकार उसकी झोपडी में झाँककर देखते है कि वहाँ न कुर्सी हैं, न मेजें है और न तक्कलुफ है फिर भी 'उसके घर का आलम फकिराना है।'

आम आदमी प्रयत्नपूर्वक अपनी एक बस्ती बसाता है, परंतु शहरों में गगनचुंबी इमारते बनाने के लिए कारखानों का निर्माण करने के लिए उसकी बस्ती को अवैध होने के कारण गिरा दिया जाता है। बस्ती का परिवेश महत्वपूर्ण होने के कारण कोई पूंजीपति वहाँ अपना आलिशान मकान बनवाना चाहता है। इसलिए झोपडियाँ गिराना उसके लिए बुल्डोजर जैसी मशीनों का प्रयोग करने जैसे हथकंडे अपनाए जाते है -

खा गया नक्शा किसी सेठ का उसके घर को
यत्न जिसने किए बस्ती को बसाने के लिए [5]
अभी कुछ जश्न मनाएंगे यहां बुलडोज़र
झोपड़ों के अभी कुछ और निरादर होंगे [6]

सम्प्रति, आम आदमी की स्थिति भयावह हो गई है। गाँव में रहनेवाला किसान कर्ज के बोझ से मौत की कामना करता है। परंतु मौत किसी की इच्छा से नहीं आती अतः वह किसान आत्महत्या करने के लिए विवश हो रहा है। मौत दुखदायी प्रसंग है परंतु आम आदमी के लिए वह सुखद प्रसंग बन जाता है। ऐसे आम आदमी को ग़ज़लकार इसलिए पागल कहते है कि वे 'अपनी मौत पर खुश होता है।'

आम आदमी की स्थिति यह है कि संपन्न वर्ग उसे रेस के घोडे के समान दौड़ाता रहता है। जो संपन्न है उनके लिए रेस का घोड़ा दौड़ाना एक खेल है, मनोरंजन है। आम आदमी भी संपन्न वर्ग के लिए एक प्राणिमात्र बनकर रह गया है -

मुझे सब मौतबर दौड़ा रहे हैं
मैं जैसे एक घोड़ा रेस का हूं [7]

आम आदमी की विशेषता ये है कि वह दुःख में भी होसला बनाए रखने का प्रयास करता है। दुःख उसे शक्ति देता है। वह जानता है कि उसके दुःख दूर करने के लिए कोई हमदर्द नहीं आएगा उसे स्वयं को अपना हमदर्द बनना पड़ेगा, साहस जुटाना होगा -

में फूट-फूट के रोऊंगा बालकों की तरह
फिर अपना बनके पिता खुद को हौसला दूंगा [8]

इस आदमी की आकांक्षाएँ भी उतनी ही है जितनी उसकी चादर है। उसे रहने के लिए एक छत भी मिल जाए तो वह संतुष्ट हो जाता है। वह जानता है कि वह जन्म के साथ अपने लिए एक ऐसा जमाना लेकर आया है जहाँ उसे अभावों में जीना है। कम से कम सुख-सुविधाओं में वह जीने का आदी हो चुका है। उसकी इस स्थिति पर ज्ञानप्रकाश जी लिखते है -

मैं तो आया हूं यहां अपना जमाना लेकर
क्या करूंगा ये तेरा राजघराना लेकर
तुम्हारे राजघराने तुम्हें मुबारिक हों -
बस एक छत की तमन्ना हमारे पास रहे [9]

उसके लिए भले ही छत न हो वह आसमान को छत मानकर जीवन व्यतीत कर देता है। यह वास्तविकता भी है कि इस देश में लाखों लोग खुले में रहते है, जिनके लिए जमीन बिस्तर है, आसमान चादर है। उनकी एक ही आकांक्षा है कि, संपन्न समाज भले ही उनकी छत छीन दे परंतु आसमाँ बनाए रखे। यह आम आदमी किसी भी स्थिति में रहने के लिए विवश है और उसमें साहस भी है। बिना मकानों के रहने की उसकी आदत बन गई है। आज भी लाखों परिवार पीढ़ी-दर-पीढ़ी इसी स्थिति में रहते हैं -

मेरे मकान की छत को उतार ले लेकिन
कि मेरे सर पे खड़ा आसमान रहने दे [10]

यह आम आदमी पेट की क्षुधा शांत करने के लिए जोखिम भरे काम भी करते है। छोटे बच्चे रस्सियों पर अपना संतुलन बनाए चलते हैं। कई प्रकार के करतब दिखाकर जीवन जी रहे हैं। यदि आग पर चलते हुए पाँव को भयानक पीड़ा होती हो तो भी दर्शकों के सामने मुस्कुराते है। इस आम आदमी को एक ही आशा आकांक्षा है कि इस जमीन पर फिर भगवान अवतार लेकर उनके संकट दूर करेंगे। उनकी संकटमोचन के प्रति आस्था को ग़ज़लकार इन शब्दों में व्यक्त करते हैं -

जमूरा आग पर करतब दिखाएगा शायद
जलेंगे पांव तो फिर मुस्कराएगा शायद
इसी उम्मीद पर बैठे हैं लोग हाथ धरे

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4 November- December 2025 / VOL-02 ISSUE-III

जर्मी पे एक दिन भगवान आएगा शायद [11]

आम आदमी के बच्चे भी अल्पायु में सयाने बन जाते है, वे अपने पिता की चिंता जानते है। वह यह भी जानते है कि उनका परिवार किस प्रकार आर्थिक अभाव में जी रहा है, पिता किस प्रकार संघर्ष कर रहे है। वे पिता की निर्धनता को स्वीकार करने लग जाते है -

मेरे बच्चों को लगा उनका पिता है मुफ़लिस
जब दिखाया उन्हें मिट्टी का खिलौना मैंने [12]

आम आदमी की इस दिशा के लिए सामाजिक व्यवस्था जबाबदार है। एक ओर वे संपन्न वर्ग है जो सुख-सुविधाओं से परिपूर्ण है। इसी के साथ बुध्दिजीवी वर्ग है जो आम आदमी को स्थिति, उसकी गरीबी पर संगोष्ठियाँ आयोजित करता है। इस विसंगति पर तीव्र प्रहार करते हुए ग़ज़लकार लिखते हैं -

आपका फ़ानूस घर में नूर बरसाता रहा
और मेरा लालटेन कमरे में थर्राता रहा
लोग मेरे घाव पर करते रहे संगोष्ठी
अपने माथे पर लगी मैं चोट सहलाता रहा
ये भी उस धनवान की शायद अदा थी दोस्तो!
मेरी साइकिल से जो अपनी कार टकराता रहा
टैंट के अन्दर से जो पकवान की खुशबू उठी
टैंट के बाहर कोई भूखा उसे खाता रहा [13]

आर्थिक एवं सामाजिक विषमता के कारण आम आदमी का साथ आम आदमी ही दे सकता है क्योंकि जो पूंजीपति है वह उसका साथ नहीं देता है -

कोई पैदल ही मेरा साथ निभा दे शायद
कारवाला तो बहुत तेज़ निकल जाएगा [14]

आम आदमी की त्रासदी यह है कि उसे सदैव निशाना बनाया जाता है। वह कोई अनुचित काम करे या न करे ऊँगली-निर्देश उसी की ओर किया जाता है। इसलिए वह सोचता है कि मृत्यु जब आएगी तब आएगी परंतु यह जमाना उसे मृत्यु के पहले ही मार डालेगा। वह उस ईश्वर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता है जो उसे दो वक्त की रोटी देकर जिंदा रखना चाहता है और जिंदा रहना उसको विवशता है -

मैं तो मामूली-सा इंसान हूँ इस बस्ती का,
जो भी उठता है, बनाता है निशाना मुझको
जिन्दगी, तू मुझे मरने नहीं देगी लेकिन –
मार डालेगा ये कम्बख्त ज़माना मुझको
ज़िन्दा रखने की कोई चाल थी उसकी यारो,
वो जो देता रहा दो-वक्त का खाना मुझको [15]

यह उपेक्षित आदमी अपनी स्थिति को पहचानता है इसलिए धनवानों की सभा में सदैव मुक बना रहता है। यह जानता है कि उसका मुखर होना संपन्न समाज को स्वीकार नहीं होगा। विषमता के कारण आम आदमी कभी भी अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाता नहीं है जैसा कि ज्ञानप्रकाश जी ने लिखा है -

धनवानों की महफ़िल में सभी बोल रहे थे,
वो चुप था कि उस शख्स को औकात का डर था [16]

कभी कवि नीरज ने सर्वहारा को संबोधित करते हुए कहा था कि वह राजमार्ग पर देखकर चले क्योंकि राजमार्ग अमीरों के लिए होते हैं, उनकी कारों के लिए होते है इसलिए जब इस मार्ग पर कोई गरीब चलता है तो सिपाही उसे पकड़ सकता है। उसकी इस दुखद स्थिति को ज्ञानप्रकाश जी ने यथार्थ रूप में वर्णित किया है -

मैं राजपथ पे चलूँगा तो और क्या होगा,
कोई सिपाही पकड़ के झिंझोड़ देगा मुझे [17]

इस आदमी के जीवन में इतने अभाव हैं, इतनी परेशानियों हैं कि 'उसे मौत भी लगती है हमसफर।' वैसे वह अभाव में जीने का आदी हो चुका है, उसे जो कुछ भी प्राप्य है उसी में उसे संतोष है। इसलिए ग़ज़लकार लिखते हैं-

हाथों पे रखके रोटी खाना है उसकी आदत,
वो क्या करेगा तेरी चाँदनी की तश्तरी को [18]

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4 November- December 2025 / VOL-02 ISSUE-III

आम आदमी की नियति में रात-दिन कठोर परिश्रम करना है। जिस प्रकार मशीन का पूर्जा रात-दिन घिसता रहता है वही स्थिति जिन्दगी के कारखाने में इस आदमी है। ग़ज़लकार ने अनुभव किया है कि -

गया हूँ जब भी मैं इस जिन्दगी के कारखाने में
बस इक पुर्जे के मानिन्द आदमी घिसता नजर आया [19]

झुग्गी-झोपड़ियों में एवं कच्चे-टूटे मकानों में रहनेवाला समाज से कटा हुआ आम आदमी की विवशता यह है कि वर्षा के मौसम में यह जागकर रात बिता देता है क्योंकि उसकी झोपडी या कच्चा मकान ढह जाएगा? यह प्रश्न उसके मन-मस्तिष्क को भयभीत किए रहता है -

घर हो कच्चा और बारिश की झड़ी चारों पहर
ऐसे मौसम में भला चुपचाप सोता है कोई [20]

यह एक सामाजिक यथार्थ है कि जनसामान्य व्यक्ति का, अपने स्वयं का कोई अस्तित्व नहीं होता, कोई अस्मिता नहीं होती अतएव उन्होंने जिन स्थितियों-परिस्थितियों में डाला जाता है वे उसी के अनुरूप अपना जीवन बना लेते हैं। लाखों आम आदमी फुटपाथों, ओव्हरब्रिजों के नीचे, रेल्वे प्रतीक्षालयों, में खुले मैदानों में रह लेते हैं। उन्हें जो भी रूखा-सुखा, जूठा खाना मिलता है उसे वे खा लेते है। विवशता के कारण उनके स्वभाव में समझौतावादी प्रवृत्ति समा गई है। उनकी इस सर्वसहा विशेषता को ज्ञानप्रकाश जी ने व्यक्त किया है -

यहाँ के लोग तो पानी की तरह सीधे-सादे हैं
कि जिस बर्तन में डालों बस उसी बर्तन-सा डल जाना [21]

अभावों से ग्रस्त एवं त्रस्त आदमी का हृदय काच के समान होता है। जो समय की मार को सहता है, उससे संघर्ष करता है और अपने मन को दृढ़ बनाता है ताकि वह टूटे नहीं। परंतु परिस्थितियों की भयानकता समय-समय पर उस पर घात-प्रतिघात करती है इसलिए उसका मन भले ही न टूटता हो परंतु दरकता अवश्य है -

गरीब आदमी का दिल भी कांच का दिल है
वो टूटता न हो लेकिन दरकता है अक्सर [22]

वर्तमान पूंजीवादी व्यवस्था में एक ओर ऊँचे और विशाल भवन हैं जो बिजली की रोशनी से चमकते-दमकते हैं। अपने ऐश्वर्य, वैभव एवं संपन्नता का मानो प्रदर्शन कर रहे हो तो दूसरी ओर वह आम आदमी है जिसके कमरे में अंधकार से लढ़ता हुआ लालटेन है, जो थर्राता रहता है। ग़ज़लकार ने पूंजीवादी व्यवस्था में आम आदमी की यथार्थ स्थिति को रेखांकित किया है -

आपका फानूस घर में नूर बरसाता रहा
और मेरा लालटेन कमरे में थर्राता रहा [23]

पूंजीपति वर्ग आदमी को आदमी नहीं कीड़े-मकौड़े समझता है। उसके जीवन-मरण की कोई चिता नहीं है क्योंकि वह अपनी संपन्नता की मस्ती में मस्त रहता है। समाचार पत्रों में इस प्रकार के अनेक प्रसंग प्रकाशित होते हैं जिसमें किसी धनाढ्य द्वारा शराब के नशे में गरीबों को मार डाला जाता है -

ये भी उस धनवान की शायद अदा थी दोस्तो!
मेरी साइकिल से जो अपनी कार टकराता रहा [24]

आम आदमी की स्थिति को दृष्टिकेंद्र में रखते हुए लिखी ग़ज़लों पर विचार व्यक्त करते हुए डॉ. प्रतिमा सक्सेना ने यह मत व्यक्त किया है कि "आम आदमी की दयनीय स्थितियों और त्रासदियों के लिए उत्तरदायी, ताकतों के उद्देश्यों को बेनकाब करना, जनता ने आत्मविश्वास तथा एक व्यापक आंदोलन की सक्रिय भूमि तयार करने में सहयोग देना, आज के साहित्यकार के लिए बुनियादी सरोकार बन गए है।"[25]

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि ज्ञानप्रकाश विवेक ने प्रगतिशील चिंतन को दृष्टि में रखते हुए आम आदमी की दुखद स्थिति को मुखरित किया है। वास्तव में यही आम आदमी देश के विकास की नींव है। उन्हीं के परिश्रम से बड़े भवन निर्माण होते है। परंतु दुर्भाग्य यह है कि वही सबसे अधिक उपेक्षित-शोषित है। वही आर्थिक एवं सामाजिक शोषण को झेलता है। वही मूक और विवश है। परिस्थितियाँ बच्चों को बहुत शीघ्र सयाना बना देती है। अभाव का चित्रण जमूरे के खेल के माध्यम से व्यक्त किया है। ज्ञानप्रकाश विवेक ने अपनी ग़ज़लों में आम आदमी की स्थिति के माध्यम से समाज को एक सशक्त जीवन-दर्शन का संदेश दिया है। इस प्रकार की परिस्थितियों के वात्याचक्र में फँसे हुए आम आदमी के प्रति संवेदनशील ज्ञानप्रकाश जी ने उसकी यथार्थ स्थिति को अभिव्यंजित किया है। इनकी ग़ज़लें आम आदमी के परिवार की सामाजिक विषयों को स्पर्श करती है।

संदर्भ ग्रंथ :-

1. दुष्यंतोत्तर हिंदी ग़ज़ल डॉ. मधु खराटे, पृ. 12

2. धूप के हस्ताक्षर ज्ञानप्रकाश विवेक, पृ. 23
3. पूर्ववत्, पृ. 37
4. पूर्ववत्, पृ. 73
5. आँखों में आसमान ज्ञानप्रकाश विवेक, प्र. 36
6. इस मुश्किल वक़्त में - ज्ञानप्रकाश विवेक, पृ. 19
7. पूर्ववत्, पृ. 17
8. पूर्ववत्, पृ. 38
9. पूर्ववत्, पृ. 36,40
10. पूर्ववत्, पृ. 48
11. पूर्ववत्, पृ. 54
12. पूर्ववत्, पृ. 59
13. पूर्ववत्, पृ. 68
14. गुफ्तगू अवाम से है - ज्ञानप्रकाश विवेक, पृ. 17
15. पूर्ववत्, पृ. 24
16. पूर्ववत्, पृ. 28
17. पूर्ववत्, पृ. 87
18. पूर्ववत्, पृ. 60
19. धूप के हस्ताक्षर - ज्ञानप्रकाश विवेक, पृ. 38
20. पूर्ववत्, पृ. 38
21. आँखों में आसमान - ज्ञानप्रकाश विवेक, पृ. 24
22. इस मुश्किल वक्त में ज्ञानप्रकाश विवेक, प्र. 43
23. पूर्ववत्, पृ. 68
24. इस मुश्किल वक़्त में - ज्ञानप्रकाश विवेक, पृ. 68
25. आधुनिक हिंदी ग़ज़ल और आधुनिकता बोध डॉ. प्रतिमा सक्सेना, पृ. 158